5. चमड़ा कमाने का छोटा कारखाना

छोटे और बड़े कारखानों में क्या अंतर हो सकते हैं, चर्चा करो।

तुमने चमड़ा कमाने का बड़ा कारखाना देखा। हमने पता किया कि कई जगहों पर चमड़ा कमाने के छोटे कारखाने भी हैं। हमारे मित्र बक्कू मोची ने हमे काका से मिलवाया। काका बहुत सालों से चमड़े के एक छोटे कारखाने में काम कर रहे हैं। वे हमें अपने कारखाने ले गये। एक मोहल्ले की गली के अन्दर, कारखाना इस प्रकार बना था कि बाहर से पता ही नहीं चलता था। कारखाने का नाम सुनकर हमने सोचा था कि बड़ा सा गेट होगा और बिल्डिंग होगी। पर यह तो मोहल्ले के एक बड़े घर जैसा ही था। पहले तो ऐसा लगा कि यह कोई अस्पताल या कांजी हाऊस है। एक तरफ हौद, पुराने खालों के ढेर और सामने एक-दो कमरे का कच्चा पक्का मकान।

पिछले पाठ के आधार पर क्या तुम कच्ची खाल से चमड़ा कमाए जाने की 5 प्रक्रियाएं बता सकते हो?

छोटे कारखाने में कच्ची खाल से चमड़ा निकालने की प्रक्रिया इस प्रकार होती है-

1. सफाई

यह काम हौद में होता है। कच्ची खाल पर मिट्टी, खून आदि लगा रहता है। एक खेप की खालों को साबुन के पानी में भिगो दिया जाता है। फिर हाथ से उनको पलटी करते हैं।

2. बाल निकालना

इस कारखाने में चार हौद हैं। खालों को साफ करने के बाद, दूसरे हौद में डाल दिया जाता है। इस हौद में चूने का पानी रहता है। खाल चूना सोखकर कुछ फूल जाती है और बालों की जड़ें भी ढीली हो जाती हैं। भिगोने के 3-4 दिन बाद छिलाई की जाती है। एक छोटे से फावड़े से बाल निकाले जाते हैं। यह सब करते-करते 6 दिन गुज़र जाते हैं।

3. चूना काटना

खालों के कमाने के लिए यह ज़रूरी है कि उसमें चूना न रहे। चूने का असर निकालने के लिये खालों को अम्ल से धोया जाता है। यह काम भी हौद में होता है। अम्ल का घोल बना लिया जाता है। फिर खालों को इसमें डाल देते हैं। बीच-बीच में उन्हें पलटते हैं। अम्ल का घोल सोख लेने पर चूने का असर खत्म हो जाता है।

4. कमाना

यह सब से महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। कमाने से खाल लचीली, मज़बूत और टिकाऊ बनती है। तब यह चमड़ा कहलाता है। कमाने के लिये बबूल की छाल या घटबोर, ऐसे कुछ वनस्पति को पीस लिया जाता है। फिर इनका घोल बनाते हैं। घोल बनाकर खालों की खेप को हौद में भिगो देते हैं। हर तीन दिन बाद इनको पलटते हैं।

हमारे सामने, काका हौद में उतर कर, नीचे की खालों को ऊपर रखते जा रहे थे। खालों को पलटना बहुत ज़रूरी है नहीं तो इसका रस पूरी तरह और बराबर नहीं फैलेगा। 15 दिन तक खालों को इस घोल में रखा जाता है। बीच में एक बार पूरे घोल को बदल देते हैं।

इस कारखाने में कमाने के लिए वनस्पति का उपयोग होता है। इसलिये इस प्रक्रिया को "वनस्पति द्वारा कमाना" कहते हैं।

5. मुलायम और लचीला बनाना

जब खालों में कड़ापन आ जाये तो समझो कमाना पूरा हुआ। अब उनको धोकर सुखाया जाता है। मुलायम और लचीला बनाने के लिए तेल, पानी और गुड़ पिलाया जाता है। कंजी या अरन्डी का तेल उपयोग करते हैं।

इस सारी प्रक्रिया में कुल मिलाकर 30 दिन लगते हैं। यानी खालों की एक खेप को सभी प्रक्रियाओं से गुज़रने में 30 दिन लगते हैं। काका ने कहा "रोज़ का हिसाब लगाएं तो 20-25 खालों का चमड़ा तैयार हो जाता है। सभी काम मज़दूर हाथ से करते हैं। यदि हमारे पास काम बहुत हो तो 50 खाल दिन भर में कमा सकते हैं। आजकल काम अधिक नहीं मिलता। जब मांग कम होती है तो खाली भी बैठना पड़ता है। उस समय मज़दूरों को छोड़ देते हैं।"

छोटे कारखाने के दो ऐसे उदाहरण दो जहां बड़े कारखाने की तुलना में मशीन से काम न होकर हाथ से काम होता है।

दोनों कारखानों में बाल निकालने की प्रक्रिया एक बार फिर से पढ़ो, इन दोनों में क्या फर्क है?

सोडियम सल्फाइड रसायन का उपयोग करने से क्या लाभ होता है?

छोटे-बड़े कारखाने में चमड़ा कमाने की प्रक्रिया मे अंतर

बड़े कारखाने में अधिक उत्पादन होता है। हमने जो कारखाना देखा, उसमें प्रतिदिन 7,000 बकरियों भेड़ों का चमड़ा कमाया जाता है। काका के छोटे कारखाने में बहुत कम चमड़ा तैयार होता है। महीने भर मे 40-60 गाय व भैंस की खालों का चमड़ा कमाया जाता है।

बड़े कारखाने में हौद, मथनी वाली मशीन, बाल काटने की मशीन और कई ड्रम होते हैं। छोटे कारखाने में केवल छोटे हौद होते हैं। बड़े कारखाने में मशीन और रासायनिक क्रियाओं का उपयोग होता है जबकि छोटे कारखाने मे वनस्पतियों का उपयोग होता है।

काका खालों को पलटते हुए

चमड़ा कमाते समय जो रसायन डाला जाता है, उसके कारण भी समय कम लगता है। साथ में यह भी है कि खालों को ड्रम में डालकर घुमाते हैं, जिससे खालें ठीक से रसायन सोख लेती हैं।

बबूल की छाल का उपयोग करें तो खालों को बहुत दिन हौद में रखना पड़ता है, बीच-बीच में उनको पलटना पड़ता है और एक बार घोल भी बदलना पड़ता है। हाथ से ये सब काम करने से समय भी अधिक खर्च होता है।

इसलिए यदि हम पूरी प्रक्रिया की तुलना करें तो एक बैच या खेप को छोटे कारखाने मे 25-30 दिन लग जाते हैं और बड़े कारखाने में 4-6 दिन ही लगते हैं।

कारखाने का सामान कहां जाता है

सामने दो व्यक्ति खालों को एक के ऊपर एक रखते जा रहे थे। खाल को सुरक्षित रखने के लिये खालों पर नमक छिड़कते और परतों में फैला देते। काका ने बताया, "यह सब माल कलकत्ता जाएगा। अच्छा माल है। मशीनों द्वारा कुछ विशेष रासायनिक क्रियाओं से तैयार किया जायेगा। इस कारखाने में तो हम थोड़ी खराब खाल का ही चमड़ा कमाते हैं। हमारे यहां मोची और कुछ छोटे

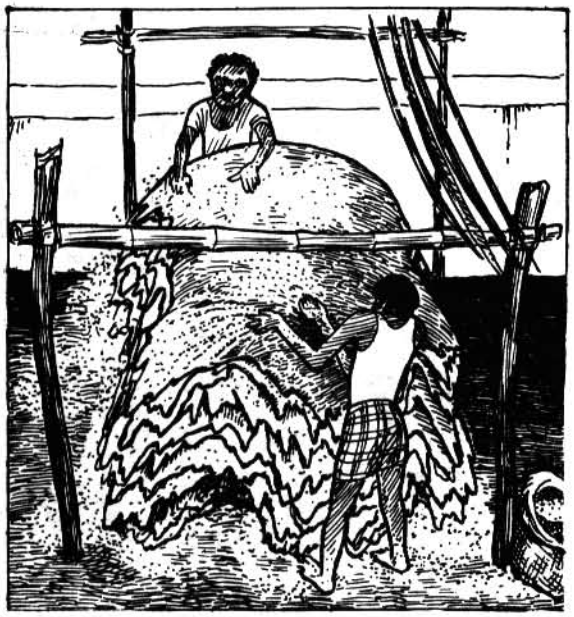

एक-एक परत पर नमक छिड़कते हुए मज़दूर

दुकानदार ही चमड़ा खरीदने आते हैं। उनके लिये ऐसे कमाया चमड़ा ठीक है।"

हमने काका से अपने बारे में और कारखाने में काम कर रहे अन्य मज़दूरों के बारे में भी बताने को कहा। काका शुरू हो गये, "हम कारखाने में सुबह 8.30 बजे आ जाते हैं और शाम को 5 बजे तक रहते हैं। हम दो मज़दूर हैं जो यहां रोज़ आते हैं। हमारा काम बंधा हुआ है। जैसे-जैसे चमड़ा कमाने का काम आता है दूसरे मज़दूर रखे जाते हैं। इन्हें दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती है। कुछ खास-खास काम हम दो ही करते हैं। हमें दूसरे मज़दूरों का काम देखना भी पड़ता है। ज़रूरत पड़े तो हम ही सभी काम कर लेते हैं।"

चमड़े के काम में काफी गंदगी में रहना पड़ता है। दिन भर गंदे पानी में खड़े रहना पड़ता है और साथ में बदबू भी सहनी पड़ती है। "इस परेशानी से बचने के लिए आप मालिक से हाथ में पहनने वाले दस्ताने और प्लास्टिक के जूते आदि की मांग क्यों नहीं करते?" हमने पूछा। हमारी बात को समझते हुए काका बोले "मालिक हमारी सुविधा का इतना ध्यान कहां रखते हैं? और हम मांग करें तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। हमें 30 रुपए रोज़ मिल जाते हैं, यही बहुत है।"

छोटे और बड़े कारखानों के मज़दूरों में क्या अंतर है?

कारखाने में गंदगी

कारखाने में बहुत बदबू आ रही थी। जब कारखाने में उपयोग किया पानी बाहर निकाल देते हैं तो पूरे मोहल्ले भर में बदबू फैल जाती है। इस बात पर मालिक का नगर निगम के साथ केस चल रहा था।

नगर निगम का कहना था कि कारखाने को शहर के बाहर ले जाना चाहिए। इसे घनी बस्ती में नहीं होना चाहिए। मालिक का कहना था कि बाहर ले जाने के लिए उसे सुविधाएं मिलनी चाहिए। 30 साल पहले कोई बस्ती नहीं थी। अब आस-पास बस्ती फैल गई है, तो उसका दोष नहीं है।

इस कारखाने का मालिक 30 साल पहले कानपुर से आया था। उसने अपने पिता के साथ यह काम शुरू किया था। उस समय इस शहर में एक-दो ही चमड़ा कमाने के कारखाने थे। धीरे-धीरे इस कारखाने के आस-पास बस्ती बन गई। कई सालों तक चमड़े की मांग बहुत थी। अब बड़े कारखानों में कमाया हुआ चमड़ा बाज़ार में छाया हुआ है और इस कारखाने पर मुश्किलें आ गयी हैं।

काका ने मुंह बनाते हुए कहा, "इस धंधे में कोई दम नहीं है।" और यह कहते कहते वे गुनगुनाने लगे-

"एक था चमड़ा
दो थे मोची
काटते-मारते
मोड़ते-जोड़ते
बनाते जाते
मजबूत जूते
ढोते-छीलते
ध्यान से कमाते
सारा काम
वे ही करते
आया प्लास्टिक,
कहता 'चल हट'

क्यों करता है तू
बेकार की खट-पट
छोड़ दे पकाना-कमाना
अब तो रबर-प्लास्टिक
रेगज़ीन का है ज़माना।"

काका ने कहा, "जब से चमड़े की चीज़ें बनाने वालों ने बड़े कारखानों में कमाया हुआ चमड़ा खरीदना शुरू किया है, तब से छोटे कारखानों में कमाए गए चमड़े की मांग कम हो गई है। प्लास्टिक के आने से मोची भी कम चमड़ा खरीदते हैं। छोटे कारखानों को पर्याप्त काम नहीं मिल पाता।"

छोटा कारखाना बड़े से बहुत अलग है। इन छोटे कारखानों को लगातार काम नहीं मिलता। काका के छोटे कारखाने में महीने भर में कभी 40 खालें कमाते हैं तो कभी 60 खालें।

बड़े कारखानों के पास बहुत काम है। जूते बनाने वाले कारखाने, दुकानदार, विदेशी व्यापारी, ये सभी बड़े कारखानों से चमड़े खरीदते हैं। इसलिए ये कारखाने लगातार नियमित रूप से चल पाते हैं।

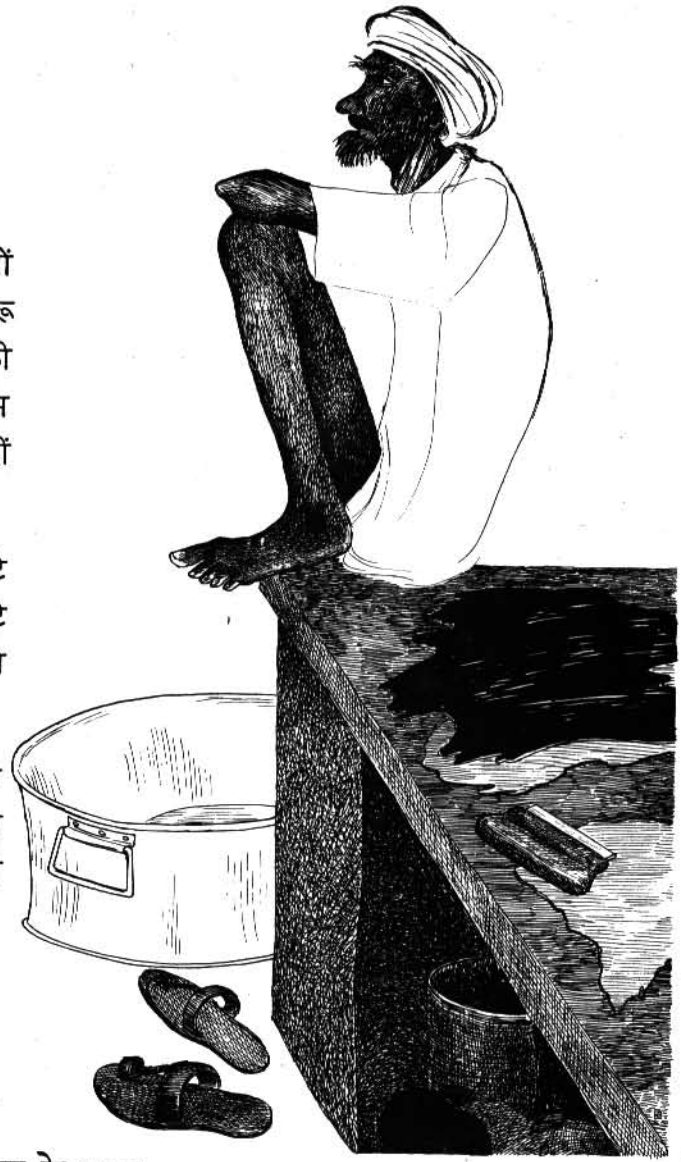

काका

अभ्यास के प्रश्न

1. चमड़े के इस छोटे कारखाने में, बड़े की तुलना में, कम उत्पादन क्यों होता है? कारण सहित समझाओ।
2. छोटे कारखाने में कितने प्रकार के मज़दूर हैं? वे क्या काम करते हैं?
3. चमड़े का काम करने वाले मज़दूरों को क्या परेशानियां होती हैं?
4. पृष्ठ 209 पर बने चित्र-3 एवं पृष्ठ 215 में क्या दिखाया गया है? क्या इन दोनों में एक ही प्रकार का काम हो रहा है? इन में क्या अन्तर है?
5. पृष्ठ 208 पर बने चित्र में कई ड्रम दिखाई देते हैं। क्या ये यंत्र छोटे कारखाने में हैं? इससे उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता है?
7. मोहल्ले वालों की परेशानी का क्या कारण है? तुम्हारी राय में इस समस्या का क्या हल होना चाहिए समझाओ।
8. कई छोटे कारखाने धीरे-धीरे बंद हो रहे है। क्या यह बात सही है? कारण सहित समझाओ।